Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Government of Haryana

No. 12–2026] CHANDIGARH, THURSDAY, MARCH 19, 2026 (PHALGUNA 28, 1947 SAKA)

PART-I

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 17 मार्च, 2026

संख्या 12/250–2024/पुरा/862–68.– हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (3) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, अधिसूचना संख्या 12/250–2024/पुरा/4213–19, दिनांक 16 अक्तूबर, 2025 के प्रतिनिर्देश से, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में यथा विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करते हैं:–

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
महेंद्रगढ किला	महेंद्रगढ किला	महेंद्रगढ	महेंद्रगढ	94//2/2	149 कनाल 2 मरला	प्रांतीय सरकार मकबुजा हरियाणा पर्यटन विभाग	महेंद्रगढ़ किला, जिसे मूल रूप से कानोड़ किला के नाम से जाना जाता है, हरियाणा में अवस्थित एक ऐतिहासिक महत्व का स्थल है। प्रसिद्ध मराठा सेनापति तात्या टोपे द्वारा 1755 ई. में निर्मित, यह किला 18वीं शताब्दी के मध्य में उत्तर भारत में मराठा प्रभाव के विस्तार का प्रमाण है। 1860 में, ब्रिटिश राज के दौरान, किले और उसके आसपास के क्षेत्र को पटियाला रियासत में शामिल कर लिया गया था। इसके बाद, पटियाला के महाराजा नरेंद्र सिंह ने अपने पुत्र महेंद्र सिंह के सम्मान में किले का नाम बदलकर महेंद्रगढ़ कर दिया। यह नामकरण किले से आगे बढ़कर कस्बे और प्रशासनिक इकाई, जिसे पहले नारनौल निजाम के नाम से जाना जाता था, तक फैल गया, जिसका नाम बदलकर महेंद्रगढ़ निजाम कर दिया गया। मराठा काल से पहले, ऐसा माना जाता है कि सम्राट बाबर के एक सेवक या अधिकारी मलिक महादूद खान ने मुगल काल के आरंभ में इस क्षेत्र में एक

							बस्ती स्थापित की थी, जो इस स्थल के प्रारंभिक सामरिक और बस्ती महत्व को दर्शाता है। महेंद्रगढ़ किले की वास्तुकला राजपूत, मुगल और मराठा शैलियों के समृद्ध संश्लेषण को दर्शाती है, जो सदियों से इस क्षेत्र को आकार देने वाले विविध सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों को प्रदर्शित करती है। किले की दीवारें मजबूत बलुआ पत्थर और ईंट की चिनाई से बनी हैं। बाहरी दीवारें रक्षात्मक प्रकृति की हैं, जिनमें कोनों पर गोलाकार और अर्ध–अष्टकोणीय बुर्ज हैं, जो राजपूत और मुगल सैन्य वास्तुकला दोनों की विशेषता है। ऊंचे प्रहरीदुर्गों के अवशेष एक सुनियोजित रक्षात्मक रणनीति का सुझाव देते हैं, जो आसपास के मैदानों के शानदार दृश्य प्रस्तुत करते हैं। प्रवेश द्वार मुगल शैली में डिजाइन किया गया एक धनुषाकार प्रवेश द्वार है, जिसमें नुकीले उभार और पुष्प रूपांकन हैं, जो सौंदर्य के साथ–साथ कार्यात्मक विचारों को दर्शाते हैं। सजावटी झरोखे (ओवरहैंगिंग बालकनी) कभी–कभी द्वारों के ऊपर पाए जाते हैं। एक संभावित दीवान–ए–खास (निजी दर्शक दीर्घा) और दीवान–ए–आम (सार्वजनिक दर्शक दीर्घा) के अवशेषों की पहचान की गई है। किले का सुगठित और कार्यात्मक लेआउट, जिसमें सजावटी अतिरेक की बजाय रणनीतिक स्थिति को प्राथमिकता दी गई है, मराठा सैन्य स्थापत्य दर्शन के अनुरूप है। निर्माण सामग्री स्थानीय रूप से उत्खनित बलुआ पत्थर और ईंटें थी, जिन्हें चूने के प्लास्टर और गारे के मिश्रण से पक्का किया गया है।

अमित कुमार अग्रवाल,
आयुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT

HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 17th March, 2026

No. 12/250-2024/pura/862-68.— In exercise of the powers conferred under sub-section (3) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964), and with reference to Haryana Government, Heritage and Tourism Department, notification No. 12/250-2024/pura/4213-19, dated the 16th October, 2025 the Governor of Haryana hereby declares the ancient and historical monument specified in column 1 of the Schedule given below to be a protected monument and archaeological site and remains as specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be a protected area:-

SCHEDULE

Name of ancient and historical monument	Name of archaeological site and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection.	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
Mahendragarh Fort	Mahendragarh Fort	Mahendragarh	Mahendragarh	94//2/2	149 Kanal 2 Marla	Prantiya Sarkar Makbuja Haryana Tourism Department	Mahendragarh Fort, originally known as Kanod Fort, is a site of considerable historical importance located in Haryana. Constructed in 1755 CE by the renowned Maratha commander Tatya Tope, the fort stands as a testament to the expansion of Maratha

							influence into northern India during the mid-18th century. In 1860, during the British Raj, the fort and its surrounding region were incorporated into the Patiala princely state. Subsequently, Maharaja Narendra Singh of Patiala renamed the fort Mahendragarh in honor of his son, Mahendra Singh. This renaming extended beyond the fort to the town itself and the administrative unit, formerly known as Narnaul Nizam, which was also renamed Mahendragarh Nizam. Prior to the Maratha period, it is believed that Malik Mahadud Khan, a servant or officer of Emperor Babur, had established a settlement in the area during the early Mughal period, indicating the site's earlier strategic and settlement value. The architecture of Mahendragarh Fort reflects a rich synthesis of Rajput, Mughal, and Maratha styles, showcasing the diverse cultural and political influences that shaped the region over centuries. Fortification Walls are constructed with robust sandstone and brick masonry; the outer walls are defensive in nature, featuring circular and semi-octagonal bastions at corners, characteristic of both Rajput and Mughal military architecture. Remnants of elevated watchtowers suggest a well-planned defensive strategy, offering commanding views of the surrounding plains. The entrance is an arched gateway designed in Mughal style, with pointed cusps and floral motifs, reflecting aesthetic as well as functional considerations. Decorative jharokhas (overhanging balconies) are occasionally found above the gates—an element rooted in Rajput design tradition. Rooms and corridors are arranged around open courtyards, a design seen in both Mughal and Rajput palatial structures. Some interiors include barrel vaults, arched niches, and lime-plastered rooms. Remains of a possible Diwan-e-Khas (private audience hall) and Diwan-e-Aam (public audience area) have been identified. The fort's compact and functional layout, prioritizing strategic positioning over ornamental excess, aligns with Maratha military architectural philosophy. Construction Materials were locally quarried sandstone and brick, bound with lime plaster and mortar.

AMIT KUMAR AGRAWAL,
Commissioner and Secretary to Government, Haryana,
Heritage and Tourism Department.

12446—C.S.—H.G.P., Pkl.